बिल्वाष्टकम्

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

बिल्वाष्टकम्

प्रकार	अष्टकम्
देवता	भगवान शिव
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	शैव
स्रोत	बृहत्स्तोत्ररत्नाकर, प्रथम भाग (1953) — Vol. 1, scan pages 446–447
आभार	पाठ: बृहत्स्तोत्ररत्नाकर भाग 1 (1953), संस्कृत विकिस्रोत योगदानकर्ता (CC BY-SA 4.0)। मिलान, सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Text in the public domain. Transcription from Sanskrit Wikisource, CC BY-SA 4.0.

त्रिदळं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रियायुधं ।

tridaḷaṃ triguṇākāraṃ trinetraṃ ca triyāyudhaṃ |

त्रिजन्मपापसंहारं एकबिल्वं शिवार्पितम् ॥ १ ॥

trijanmapāpasaṃhāraṃ ekabilvaṃ śivārpitam || 1 ||

त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैश्शुभैः ।

triśākhairbilvapatraiśca acchidraiḥ komalaiśśubhaiḥ |

तव पूजां करिष्यामि एकबिल्वं शिवार्पितम् ॥ २ ॥

tava pūjāṃ kariṣyāmi ekabilvaṃ śivārpitam || 2 ||

दर्शनं बिल्ववृक्षैश्च स्पर्शनं पापनाशनम् ।

darśanaṃ bilvavṛkṣaiśca sparśanaṃ pāpanāśanam |

अघोरपापसंहारं एकबिल्वं शिवार्पितम् ॥ ३ ॥

aghorapāpasaṃhāraṃ ekabilvaṃ śivārpitam || 3 ||

साळग्रामेषु विप्रेषु तटाके वनकूपयोः ।

sāḷagrāmeṣu vipreṣu taṭāke vanakūpayoḥ |

यज्ञकोटिसहस्राणां एकबिल्वं शिवार्पितम् ॥ ४ ॥

yajñakoṭisahasrāṇāṃ ekabilvaṃ śivārpitam || 4 ||

दन्तिकोटिसहस्रेषु अश्वमेधशतानि च ।

dantikoṭisahasreṣu aśvamedhaśatāni ca |

कोटिकन्याप्रदानेन एकबिल्वं शिवार्पितम् ॥ ५ ॥

koṭikanyāpradānena ekabilvaṃ śivārpitam || 5 ||

एकं च बिल्वपत्रैश्च कोटियज्ञफलं लभेत् ।

ekaṃ ca bilvapatraiśca koṭiyajñaphalaṃ labhet |

महादेवैश्च पूजार्थं एकबिल्वं शिवार्पितम् ॥ ६ ॥

mahādevaiśca pūjārthaṃ ekabilvaṃ śivārpitam || 6 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

काशीक्षेत्रे निवासं च कालभैरवदर्शनम् ।

kāśīkṣetre nivāsaṃ ca kālabhairavadarśanam |

गयाप्रयागमे दृष्ट्वा एकबिल्वं शिवार्पितम् ॥ ७ ॥

gayāprayāgame dṛṣṭvā ekabilvaṃ śivārpitam || 7 ||

उमया सह देवेशं वाहनं नन्दिशङ्करम् ।

umayā saha deveśaṃ vāhanaṃ nandiśaṅkaram |

मुच्यते सर्वपापेभ्यो एकबिल्वं शिवार्पितम् ॥ ८ ॥

mucyate sarvapāpebhyo ekabilvaṃ śivārpitam || 8 ||

अर्थ

तीन पत्तों वाले बिल्वपत्र की तुलना तीन गुणों, शिव के तीन नेत्रों और तीन आयुधों से की गई है, और कहा गया है कि यह तीन जन्मों के पाप नष्ट करता है। हर श्लोक शिव को अर्पित एक बिल्वपत्र के पुण्य की तुलना महान कर्मों से करता है — अनेक दान, असंख्य यज्ञ, काशीवास और कालभैरव दर्शन, गया और प्रयाग की यात्रा — और अन्तिम श्लोक कहता है कि उमा और नन्दी सहित शिव को इसे अर्पित करने वाला सब पापों से मुक्त होता है।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।